VOL- IX | ISSUE- VII | JULY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

प्रेमचन्द के पत्रों की खोज

प्रा. डॉ रमेश विठोबा कांबळे
(अध्यक्ष,हिन्दी विभाग)
वसंतराव काळे महाविद्यालय,ढोकी ता.जि.उस्मानाबाद

आज आधुनिकीकरण के दौर में पत्र-लेखन बिल्कुल अन्तिम कगार पर खडा है। किसी के भी पास आज इतना समय नही है कि, वे थोडी बहुत मेहनत करके आपने विचारों को कलम की स्याही से व्यक्त कर सके, क्योंकि आज लोगों के हाथ में आधुनिक यंत्र जैसे कॅम्प्यूटर, मोबाईल, ई-मेल जैसे साधन आ चुके है जिसके कारण वे आसानी से कम समय में अपने विचारों, भावों को कहीं पर भी बैठकर अपने परिचितों, रिश्तेदारों को आसानी से भेज रहे है और प्राप्तकर्ता भी तुरंत जवाब दे रहा है। उसके पहले एक समय था जब व्यक्ति अपने जीवन की गतिविधियों को एक पत्र में लिखकर आपसी सगे संबंधियों को भेजा सकता था और अपना असीम प्रेम अपनापन झलकता था उस के इंतजार में डाकिए का बेसब्री से इंतजार करता था। इस संम्पूर्ण वक्तव्य के आधार पर हम यह नहीं कह सकते है कि पत्र लेखन विधा अब समाप्त हो गई या समाप्ति की कगार पर है।

प्रस्तुत, आलेख में प्रेमचन्द के प्रकाशित पत्र-संकलनों के संदर्भ में कहने का एक छोटा-सा प्रयास किया गया है। हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द के पत्र-संकलन एक अमूल्य निधी है जो किसी भी पाठक या शोधार्थियों के लिए गर्व की बात हो सकती है। प्रेमचन्द एक विश्वप्रसिद्ध हिन्दी के साहित्यकार थे। वे अपने देश में जितने हिन्दी साहित्य में लोकप्रिय थे उससे कहीं अधिक विदेशों में भी थे। उन्होंने अपने जीवन काल में हजारों पत्र लिखे होगें। जितने भी साहित्यकारों ने, आलोचकोंने उनकी जीवनी लिखने का प्रयास किया हैं उन सभी ने प्रेमचन्द के द्वारा लिखे पत्रों का उपयोग आवश्य किया है चाहे वे उनके पुत्र द्वारा लिखी प्रेमचन्द की जीवनी 'प्रेमचंद: कलम का सिपाही' हो या हरियाणा के प्रसिद्ध आलोचक मदन गोपाल द्वारा लिखी जीवनी 'प्रेमचंद: कलम का मजदूर' हो। इन दोनों जीवनियों को पाठक वर्ग पढ़ने पर यह अनुमान लगा सकते है कि इन दोनों लेखकों ने प्रेमचंद के पत्रों का उपयोग किस हद तक किया है।

प्रेमचंद साहित्य के खोजी व प्रसिद्ध विशेषज्ञ कमल किशोर गोयनका इन दोनों जीवनीयों के संबंध में अपने लेख 'मदन गोपाल : प्रेमचंद के खोजी विशेषज्ञ और जीवनीकार' में लिखते है- " यह एक अदभूत संयोग ही है कि अमृतराय और मदन गोपाल एक ही समय में प्रेमचंद की जीवनी लिख रहे थे तथा दोनों के पास लगभग एक जैसी ही सामग्री थी, किन्तु एक हिन्दी में लिख रहा था तथा दूसरा अंग्रेजी में और दोनों में से किसी को नहीं मालूम था कि एक- दूसरे की लेखन शैली क्या है। दोनों ही जीवनीकारों ने प्रेमचंद के पत्रों का बड़ी मात्रा में उपयोग किया। अमृतराय ने अपनी जीवनी को जहां उपन्यास के रूप में लिखा है वहीं मदन गोपाल ने उसे जीवनी के रूप में प्रस्तुत किया है।"1 अमृतराय प्रेमचंद के पुत्र थे प्रेमचंद की जीवनी 'प्रेमचंद : कलम का सिपाही' की भूमिका में प्रेमचंद के पत्रों के उपयोग के संबंध में लिखते है- "जीवनी लिखने में इन चिटिठ्यों से मैंनें कितनी मदद ली है, यह मेरे कहने की चीज नहीं है,

पढनेवाले खुद देखेंगे। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि इस खजाने के बगैर अब मैं जीवनी की कल्पना भी नहीं कर सकता, लिखी वह शायद तब भी जाती लेकिन लंगडी होती, बेजान होती"2 इस प्रकार के विचार अमृतराय प्रेमचंद के पत्रों के उपयोग के संबंध में रखते हैं।

प्रदीप जैन जैसे आलोचक प्रेमचंद के पत्रों के संबंध में कहते है कि- " प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में हजारों पत्र लिखे होंगें, लेकिन उनके जो पत्र काल का ग्रास बनने से बचे रह गए और जो संप्रति उपलब्ध है उनमें सर्वाधिक पत्र वे हैं जो उन्होंने अपने काल की लोकप्रिय उर्दू मासिक पत्रिका 'जमाना' के यशस्वी संपादक मुंशी दयानारायण निगम को लिखे थे। प्रेमचंद के मानस को समझने के लिए निगम साहब के नाम लिखे उनके पत्रों के महत्व का अनुमान इस तथ्य से लगाया जाना संभव है कि जब 8 अक्तूबर 1936 को उनके देहावसान के उपरान्त 'जमाना' का प्रेमचंद विशेषांक दिसंबर 1937 में प्रकाशित होकर साहित्य-संसार के हाथ में आया तो उसमें 'जगाना' संपादक मुंशी दयानारायण निगम के कई लेख प्रकाशित हुए, जिनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेख है-'प्रेमचंद के खयालात' इस सुदीर्घ लेख में निगम साहब ने प्रेमचंद की विचार यात्रा का तथ्य परक दिग्दर्शन कराया था।"3

सन1962 में प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय ने प्रेमचंद के लगभग हजारों पृष्ठ की लुप्तप्रायः सामग्री को खोजकर प्रकाशित कराया और साहित्य जगत में इस वर्ष को स्मरणीय वर्ष बना दिया। इस दिया में महत्वपूर्ण कार्य प्रेमचन्द के पत्रों को खोजकर 'चिट्ठी-पत्री' नामक दो भागों में संकलित कर प्रकाशित करवाया। इस संकलन से पूर्व प्रेमचंद के पत्रों को सहजने का कार्य किसी भी आलोचक द्वारा नहीं किया गया था। इस तरह अमृतराय का यह कार्य सराहनीय था, उन्होंने प्रेमचंद के नष्ट होते इस साहित्य को लुप्त होने से बचाया। अमृतराय इस संकलन की भूमिका में लिखते है- "जीवन के तथ्य तो जैसे इन चिटिठ्यों में है, क्या लिख रहे है, क्या पढ़ रहे है, क्या सोच रहे हैं, घर में कब किसका क्या है, कौन जीया कौन मरा, किसकी शादी हुई"4। ऐसे अनेक रहस्य इस संकलन से उजागर होते हैं, जिनसे पाठक अनभिज्ञ थे। इस संकलन के प्रथम भाग में प्रेमचंद के मित्र तथा 'जमाना' संपादक मुंशी दयानारायण निगम को लिखे गये लगभग 281 पत्र शामिल है, जो कि उर्दू में लिखे गए थे, जिनका हिन्दी अनुवाद अमृतराय ने किया था। इस संकलन के द्वितीय भाग में 32 व्यक्तियों को लिखे गए 235 पत्र शामिल है, जो उर्दू, अंग्रेजी तथा हिन्दी में लिखे गए है। 'चिट्ठी-पत्री' के द्वितीय भाग में 45 ऐसे पत्र भी शामिल है जो प्रेमचंद को उनके विभिन्न साहित्यिक मित्रों द्वारा लिखे गए है। सन 1988 में डॉ- गोयनका ने प्रेमचंद के लगभग 1400 पृष्ठों को खोजकर भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से 'प्रेमचंद का अप्राप्य साहित' शीर्षक से दो भागों में प्रकाशित करवाया। इस संकलन के द्वितीय भाग में ' प्रेमचन्द के पत्र' एवं 'प्रेमचंद के नाम पत्र' ऐसे विपूल मात्रा में पत्रों के संयोजन का अमूल्य कार्य किया। इस खंड में शामिल पत्रों को संकलित करने के पीछे का उद्देश को स्पष्ट करते हुए डॉ. गोयनका पुस्तक की भूमिका में यह स्पष्ट करते है कि- "प्रेमचंद के पत्र शीर्षक के अन्तर्गत प्रेमचंद द्वारा 52 व्यक्तियों को लिखे गए 149 पत्र संकलित है, जिनमें 102 हिन्दी में, 27 अंग्रेजी में तथा 20 उर्दू में लिखे गए है।इन 52 व्यक्तियों में से 10 व्यक्ति ऐसे है जिनको लिखे गए पत्र 'चिट्ठी- पत्री' के दोनों भागों में भी संकलित है। इसका अर्थ है कि 42 ऐसे व्यक्ति है, जिनको लिखे पत्र पहली बार हिन्दी में प्रकाशित हो रहे है। इनमें 8-10 पत्र ऐसे भी है जिनका हिन्दी अनुवाद छप चुका है, किन्तु हमने उन्हें इसलिए संकलित किया है जिससे वे अपनी मूल भाषा अंग्रेजी में सुरक्षित रह सके।"5 इस तरह पुस्तक में संकलित पत्रों के इतिहास की जानकारी स्पष्ट होती है।

प्रेमचंद के पत्रों के संबंध में एक और संकलन की जानकारी प्राप्त होती है। मदन गोपाल द्वारा उर्दू मे प्रेमचंद के संपूर्ण साहित्य को 'कुल्लियात-ए-प्रेमचंद'शीर्षक से 24 भारी-भरकम खंडों में वर्ष 2000-2005 के बीच प्रकाशित करवाया, यह एक चिरस्मरणीय

कार्य था। इस संकलन के भाग 17 में पूर्व प्रकाशित तीनों संकलनों में प्रकाशित पत्रों को उर्दू में प्रकाशित करवाया था। मदन गोपाल प्रेमचंद के पहले ऐसे अध्येता और जीवनीकार थे जिन्हों ने प्रेमचंद के पत्रों, कहानियों आदि को खोजा और जीवन के कई दशक पूरी निष्ठा के साथ अर्पित किया।

1996 में जनवाणी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रेमचंद का हिन्दी में संपूर्ण मौलिक शुद्ध प्रामाणिक साहित्य को 20 खण्डों में 'प्रेमचंद रचनावली' शीर्षक से प्रकाशित किया गया जिसके 19 वें खंड मे 'प्रेमचंद के पत्रों को संकलित किया। इस रचनावली के संपादक रामआनंद थे, जिन्होंने प्रेमचंद के जेष्ठ पुत्र, स्व. श्रीपतराव के साथ मिलकर लगभग बीस वर्षों तक प्रेमचंद के अप्राप्य साहित्य पर शोधकार्य किया था। सन 2002 में प्रेमचंद साहित्य के विशेषज्ञ कमल किशोर गोयनका ने अनिल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'प्रेमचंद के नाम पत्र' एवं दूसरा 2007 में अमित प्रकाशन, गाजियाबाद से प्रकाशित 'प्रेमचंद : पत्रकोश'। पहले संकलन प्रेमचंद को लिखे गए उनके विभिन्न साहित्यिक मित्रों एवं परिजनों के पत्रों को संकलित किया गया था। इस संकलन में लगभग वे सभी पत्र शामिल हो गए है, जो प्रेमचंद को उनके मित्रों द्वारा लिखे गये थे। दूसरा संकलन जो वर्ष 2007 मे 'प्रेमचंद : पत्रकोश' के नाम से प्राप्त होता है इसमें प्रेमचंद के लगभग 673 पत्र संकलित हैं जिनमें पूर्व प्रकाशित संकलन चिट्ठी- पत्री' (भाग -1 व भाग-2) से 510 पत्र, प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य' (भाग - 2) से 149 पत्र एवं 14 पत्र इस संकलन में ऐसे भी शामिल हैं जो किसी भी संकलन में शामिल नहीं हो पाए थे। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली सन 2011 में प्रदीप जैन के कुशल संपादन में पुस्तक 'प्रेमचंद की शेष रचनाएँ' दिखने को मिलती है। इस पुस्तक मे प्रेमचंद के ऐसे 35 पत्र भी संकलित किए गए है जो अब तक पूर्व प्रकाशित किसी भी संकलन में दिखाई नहीं देते हैं। इन 35 नए पत्रों को शामिल करके डॉ. प्रदीप जैन ने प्रेमचंद के पत्रों की संख्या में बढ़ोतरी करने का एक महत्वपूर्ण कार्य किया है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरणानुसार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रेमचंद के पत्रों की खोज का सिलसिला समय-समय पर विभिन्न विद्वानों, आलोचकों द्वारा किया जा रहा है। अभी। भी कई ऐसे पत्र हो सकते हैं, जो पाठकों के समक्ष न आ पाए हो, प्रेमचंद के पत्र हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है जो प्रेमचंद के जीवन एवं कृतित्व की भरपूर विवेचना करते है। अत: इतनाही कहा जा सकता है कि प्रेमचंद के लुप्तप्रायः पत्रों की खोज के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी साहित्य की इस अमूल्य निधि को नष्ट होने से बचाया जा सकेगा।

सन्दर्भ

1) पुस्तक-वार्ता, द्विमासिक पत्रिका, महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र, मार्च-अप्रैल 2009, पृष्ठ 34,35
2) भूमिका, अम्रतराय, हंस प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ 4-5
३) प्रेमचंद के पत्र: तिथि निर्धारण की समस्या, डॉ प्रदिप जैन. weww. Hindiusamay. com
4) भूमिका, चिट्ठी-पत्री, भाग1 अमृतराय हंस प्रकाशन इलाहाबाद प्रष्ठ-5
5) आत्मकथ्य, प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य खंड 2, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्र.10